MAHARAJA COLLEGE ,ARA

UG @ 2nd Year

हिंदी नाटक

चंद्रगुप्त नाटक (प्रकाशन वर्ष :1931 ई.)

नाटककार – जयशंकर प्रसाद

चंद्रगुप्त नाटक के नाटककार जयशंकर प्रसाद जी हैं। इसका प्रकाशन सन् 1931 ई. में हुआ। चंद्रगुप्त ऐतिहासिक नाटक है। चार अंकों में रचित इस ऐतिहासिक नाटक में विदेशियों से भारत का संघर्ष और भारतीय संस्कृति एवं पराकर्म को स्थापित करने की सार्थक कोशिश की है। राष्ट्रवादी कवि और नाटककार जयशंकर प्रसाद के हृदय में भारतीय गुलामी को लेकर गहरी व्यथा दी। इस नाटक के माध्यम से उन्होंने अपनी व्यथा को व्यक्त किया है।

चंद्रगुप्ज नाटक मौर्य साम्राज्य के संस्थापक चंद्रगुप्त मौर्य के संघर्ष और अभ्युदय की कथा है। प्रमुख पात्रों में मौर्य सम्राट चंद्रगुप्त (नायक), आचार्य चाणक्य, मगध सम्राट नंद, मगध का आमात्य राक्षस, आमात्य वररुचि, मगध का मंत्री शकटार, तक्षशिला का राजकुमार आम्भीक, पंजाब का

MAHARAJA COLLEGE ,ARA

राजा पर्वतेश्वर, मालव कुमार सिंहरण, ग्रीक विजेता सिंकदर, फिलिप्स, एनिसाक्रिटीज, मेगास्थनीज, सिल्यूकस, दण्डयायन आदि तथा नारी पात्रों में तक्षशिला की राजकुमारी और आम्भीक की बहन अलका, मगध राजकुमारी कल्याणी, सुवासिनी, मालविका, कार्नेलिया, एलिस, मौर्य पत्नी आदि उल्लेखनीय है।

इस नाटक की ऐतिहासिकता को प्रमाणित करने के लिए नाटककार ने नाटक के आरंभ में एक लंबी भूमिका 'मौर्य–वंश' शीर्षक से लिखी है। यह भूमिका बहुत ही मनोयोग और शोध के उपरान्त लिखी गयी है। इसमें मुख्य रूप से चार घटनाएं ऐतिहासिक है।

1. सिकन्दर का भारत पर आक्रमण।
2. नंदकुल की पराजय।
3. सेल्यूकस का प्रभाव ।
4. मौर्य वंश की स्थापना।

क्रमशः